Reg. No. ☐☐☐☐☐☐☐☐☐

HNH 402

First Semester M.A. Degree Examination, December 2018
HINDI (Hard Core – II)
Madhyakaleen Hindi Kavya
(मध्यकालीन हिन्दी काव्य)

Time : 3 Hours Max. Marks : 70

I. सही उत्तर चुनिए : **(10×1=10)**

1) इनमें कौन ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं ?
अ) कबीर आ) जायसी इ) तुलसीदास ई) नंददास

2) रामानंद किस भक्ति धारा के कवि हैं ?
अ) सगुण भक्तिधारा आ) निर्गुण भक्तिधारा
इ) कृष्ण काव्यधारा ई) राम काव्यधारा

3) 'पद्मावत' का लेखक है
अ) आलम आ) मंझन इ) जायसी ई) उसमान

4) कबीर किसके शिष्य थे ?
अ) रामानुज आ) रामानंद इ) शंकराचार्य ई) नानकदेव

5) तुलसीदास की भक्ति किस प्रकार की है ?
अ) दास्यभाव आ) प्रेमभक्ति इ) रागानुराग भक्ति ई) पृष्ठीमार्गी

6) सूरदास का लीला वर्णन किससे प्रभावित है ?
अ) महाभारत आ) गीत गोविन्द
इ) विद्यापति की पदावली ई) भागवत पुराण

7) 'बरवै रामायण' किसकी रचना है ?
अ) तुलसीदास आ) नरहरिदास इ) केशवदास ई) नाभादास

8) अष्टछाप में कितने कवि हैं ?
अ) पाँच आ) सात इ) आठ ई) दस

9) बिहारी सतसई में कितने दोहे हैं ?
अ) सात आ) सत्तर इ) सात सौ ई) सात हजार

10) 'दुलहिन गावहु मंगलाचार' पद किसका है ?
अ) कबीरदास आ) तुलसीदास इ) सूरदास ई) रसखान

P.T.O.

II. किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **(4×10=40)**

1) पठित दोहों के आधार पर कबीर की काव्य-कला का परिचय दीजिए।

2) सूर के भ्रमरगीत की विशेषताएँ लिखिए।

3) अयोध्याकांड के मार्मिक प्रसंगो का विश्लेषण कीजिए।

4) 'नागमति वियोग' में चित्रित बारहमासा का विवेचन कीजिए।

5) बिहारी के काव्य-सौष्ठव पर एक लेख लिखिए।

6) 'कबीर एक समाज-सुधारक' - इस विषय की आलोचना कीजिए।

III. किन्हीं **चार** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **(4×5=20)**

1) सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराई।
धरती सब कागद करौं, तऊ हरि गुन लिख्या न जाई।।

2) कस्तुरी कुंडलि बसै, मृग ढूढै बन मांहि।
ऐसै घटि घटि राँम है, दुनिया देखै नाहि।।

3) ऊधौ! मन नाहीं दस बीस।
एक हुतौ सो गयो स्याम , सँग, को अतराधै ईस ?
भई अति सिथिल सबै माधव बिनु जथा देह बिन सिस।
स्वासा अटकि रहैं असा लगि, जीवहिं कोटि वरीस।
तुम तौ सखा स्यामसुन्दर के सफल जोग के ईस।
सूरदास रसिक की बतियाँ पुरवो मन जगदीस।।

4) चढा आसाढ, गगन घन गाजा। साजा बिरद ढुंढ दल बाजो।।
धूम, साम, धौरे घन धाए। सेत धजा बंग पाँति देखाए। ।
खडग बीजु चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरसहिं घन घोरा।।
ओनई घटा आई चहुँ फेरी। कतं! उबारु मदन हैं घेरी।।

5) नहिं पराग नहीं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल।
अलि कली ही सौं बंध्यौ, आगैं कौन हवाला।।

6) मुदित महीपति मन्दिर आए। सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए।।
कहि जयजीत सीस तिन्ह नाए। भूप सुमंगल बचन सुनाए।।
जौं पाँचहि मत लागै नीका। करहुँ हरषि हियं रामहि टीका।।
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत बिखँ परेउ जनु पानी।।